प्रो. गिरीश्वर मिश्र

दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और मनोविज्ञान विभाग के पूर्व प्रमुख तथा कला संकाय के पूर्व डीन के रूप में कार्यरत रहे हैं। चार दशकों में फैले अपने अकादमिक कैरियर के दौरान इन्होंने गोरखपुर, इलाहाबाद, भोपाल और दिल्ली विश्वविद्यालयों में अध्यापन का कार्य किया है। मनोविज्ञान के अलावा विभिन्न विषयों पर २५ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। मनोविज्ञान अकादमी के राष्ट्रीय संयोजक एवं अध्यक्ष हैं। जर्मनी, ब्रिटेन तथा अमेरिका के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अतिथि अध्यापक रहे। सम्प्रति - महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में कुलपति हैं।

सम्पर्क : misragirishwar@gmail.com

प्रतिक्रिया

देवनागरी लिपि ही हिन्दी के लिए उपयुक्त है

कोई भी भाषा कुछ चुने हुए ध्वनि-प्रतीकों की सहायता से विशेष समुदाय के मनुष्यों के बीच पारस्परिक संवाद को संभव बनाती है। इस तरह के संवाद में ही भाषा का जीवन रचा बसा होता है। कई ध्वनियाँ मिल कर शब्द रचती हैं। ध्वनियों से रची वाणी का उपयोग करते हुए हम संचार का कार्य संपादित करते हैं। पर शब्द आकाश में तिरते हैं और उनके ध्वनिरूप का अस्तित्व तभी तक रहता है जब तक ध्वनि गूँजती रहती है। वाचिक या मौखिक परम्परा में यह गूँज लोगों की स्मृति का हिस्सा बन कर जीवित रहती है। इसके विपरीत लिपि चिह्नों की ऐसी व्यवस्था होती है जो ध्वनियों को विस्थापित कर उनकी जगह लेती है और शब्दों को चाक्षुष रूप देती है जो ज्यादा प्रभावी और स्थायी होता है। लिपि में शामिल विभिन्न संकेत मिल कर ध्वनि की अभिव्यंजना होने के कारण भाषा को एक मूर्त आकार देते हैं। इस तरह लिपि और वाचिक व्यवहार को एक ख़ास तरह की व्यवस्था और अनुशासन में ढाल देती है। लिपि की सहायता से ही भाषा अंकित तथा दृश्य रूप में हमारे सामने वक्ता से निरपेक्ष या स्वतंत्र रूप में भी उपस्थित हो पाती है। लिपि के होने पर भाषा के लिए किसी के साथ सतत साक्षात संवाद की दरोकार नहीं रह जाती। लिपि भाषा को अतिरिक्त सामर्थ्य प्रदान करती है।

इस तरह लिपि भाषा को एक प्रत्यक्ष और प्रकट रूप देने के साथ-साथ वक्ता की अनुपस्थिति में भी भाषा के अस्तित्व और निरंतरता संरक्षण कर उसे अक्षुण्ण बनाए रखती है। अतः भाषा के दीर्घ जीवन के लिए लिपि अनिवार्य रूप से जरूरी है। भाषा का लिखित रूप हमारे लिए सृजनात्मक दुनिया की संभावनाओं का एक और द्वार खोलता है। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि भाषाओं का इतिहास इस बात का गवाह है कि जिन भाषाओं की लिपि नहीं थी या नहीं है वे बोलने वाले समुदाय के साथ समाप्त हो चुकी हैं या फिर समाप्त होने के कगार पर पहुँच रही हैं। लिपि के बिना भाषा का जीवन खतरे में पड़ जाता है। आंकड़े बताते हैं कि विश्व में जाने कितनी भाषाएँ दिन-प्रतिदिन मर रही हैं।

चूंकि भाषा में ही हमारी ज्ञानराशि का अधिकाँश भाग बसता है इसलिए लिपि ज्ञान को सीमित देश और काल की सीमाओं से मुक्त कर उसे देश-देशांतर में उपलब्ध कराने के लिए एक आवश्यक उपकरण बन जाती है। आज पुस्तकों की तेजी से पसरती दुनिया निश्चय ही लिपि की सत्ता का ही प्रमाण प्रस्तुत करती है। वस्तुतः भाषा, ज्ञान और लिपि के बीच परस्परावलंबन का आपस में बड़ा गहरा रिश्ता है। लिपि के अभाव में भाषा ज्ञान के प्रवाह को बड़े सीमित ढंग से ही संचालित कर पाती है। वैसे तो ज्ञान का संरक्षण और विस्तार भाषा के दृश्य और श्रव्य दोनों तरह की प्रस्तुति की अपेक्षा करता है पर लिखित रूप अधिक मूल्यवान होता है और भाषा की सामर्थ्य को ऊंचे धरातल पर प्रतिष्ठित करता है। छोटे बच्चे को शुरू में लिपि के सहारे भाषा-ज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश शुरू कराया जाता है और बच्चा ध्वनि और उसके लिए नियत प्रतीकों के बीच का साहचर्य स्थापित करने लगता है।

आज रोमन लिपि का अनेक देशों में प्रचार दिखता है। मूलतः ग्रीक भाषा की लिपि रोमन थी जो यूरोप, अफ्रीका और एशिया के कुछ देशों की भाषाओं की लिपि बन गयी। ऐसा मुख्यतः अंग्रेजी उपनिवेश वाले देशों में हुआ। भारत में रोमन के साथ अंग्रेजी का प्रसार हुआ और आज बौद्धिक विमर्श के लिए अंग्रेजी का प्रभुत्व स्थापित है, इसके बावजूद कि इसे बोलने वालों की संख्या दस ग्यारह प्रतिशत तक ही है और समाज में काम करने के लिए अंग्रेजी नहीं भारतीय भाषा का ही उपयोग करना पड़ता है। उच्च शिक्षा में, कोर्ट कचहरी में और तकनीकी क्षेत्र में अंग्रेजी का ही दबदबा बना हुआ है। आभिजात्य की द्योतक अंग्रेजी सत्ता के पास है और एक वैश्विक आकांक्षा स्फुरित हो रही है कि अंग्रेजी पढ़कर योग्यता, काबिलियत और धनार्जन की संभावना बढ़ती है। अपनी भाषा को छोड़ कर बच्चे को पराई भाषा सिखाई जाती है और इस तरह ये बच्चे बहुत सारा समय एक अनुवाद की प्रक्रिया में गंवाते हैं। आज अमेरिका में यदि प्राइमरी स्तर पर अंग्रेजी छोड़ कोई और भाषा पढ़नी हो तो क्या शैक्षिक उन्नति का वही हाल होता जो है? शायद नहीं। रोमन और अंग्रेजी के माध्यम से हम बच्चों के लिए सीखने की एक जटिल परिस्थिति

पैदा करते हैं और शैक्षिक उपलब्धि में वे अन्य देशों से बहुत पीछे हैं। हमारा समाज मानव विकास की गहरी उपेक्षा का शिकार हो रहा है।

समय-समय पर रोमन लिपि के वर्चस्व को देख यह प्रस्ताव किया जाता रहा है कि हिन्दी को आगे बढ़ाने के लिए उसे रोमन लिपि में लिखा जाय। हिन्दी भाषा स्वभावतः 'देवनागरी' लिपि में निबद्ध है। इस लिपि में स्वर और व्यंजन के बीच स्पष्ट अंतर है जो रोमन लिपि में नहीं पाया जाता है। रोमन में एक ही ध्वनि के लिए अनेक संकेतों का उपयोग किया जाता है। दूसरी ओर एक ही संकेत से अनेक ध्वनियाँ भी पैदा की जाती हैं। यह एक अराजक सी स्थिति है। रोमन में छोटे (स्माल) और बड़े (कैपिटल) अक्षर का उपयोग एक अनावश्यक जटिलता ही है। कहना न होगा कि रोमन की अवैज्ञानिकता अंग्रेजी में होने वाली गलतियों का कारण है। स्मरणीय है कि रोमन लिपि अपनाने मात्र से भाषा नहीं समझी जा सकेगी। फ्रेंच, जर्मन, रूसी आदि भाषाओं को रोमन में रहते हुए भी अंग्रेजी जानने वाले के लिए उपयुक्त नहीं है।

हिन्दी का ककहरा देवनागरी लिपि में सीखा जाता है। इसके आधिकारिक रूप में ११ स्वर और ३५ व्यंजन हैं। प्रत्येक स्वर के लिए बारह खड़ी की एक निश्चित मात्रा है। व्यंजनों को कंठ से उत्पन्न, दन्त्य, तालव्य, मूर्धन्य, ओष्ठ्य जैसे वर्गों में रखा गया है। हर एक वर्ग में ५-५ व्यंजन हैं। आठवीं और नवीं सदी में नागरी लिपि का प्रचलन मिलने का इतिहास है और हमारे संविधान ने इसे राजभाषा हिन्दी की अधिकारिक लिपि का दर्जा भी दिया है। बीसवीं सदी के आरम्भ में अनेक प्रबुद्ध भारतीयों ने देश की एकता के लिए एक लिपि अपनाने पर जोर दिया था। इनमें दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, शारदा चरण मित्र, लोकमान्य तिलक तथा वी.कृष्णास्वामी ऐयर आदि का नाम प्रमुख है। विनोबा जी ने अपने व्यापक अध्ययन से देवनागरी को भारतीय बोलियों की ध्वनियों के लिए वैज्ञानिक माना। वे इसे जोड़ लिपि भी कहते थे। उनका सोचना था कि यदि इसमें दो तीन अक्षरों को सम्मिलित कर लिया जाय तो ज्यादातर हिन्दुस्तानी भाषाओं का काम चल जायगा। इसे सीखना आसान है। एक ध्वन्यात्मक लिपि के रूप में यह अद्वितीय है। इसमें हर वर्ण एक अक्षर व्यक्त करता है। हर ध्वनि के लिए एकल वर्ण होने से यह किसी भी भाषा के लिए उपयोगी हो सकती है। इसके उपयोग से भाषाई निकटता बढ़ेगी। चूंकि प्रत्येक वर्ण लेखन की इकाई होता है, उसे लेखिम भी कहते हैं। उसका एक निश्चित स्वनिक नियम भी होता है। इसका लाभ यह है कि सही उच्चारण जान लेने वाला उसे सही ढंग से लिख सकता है। लिखने और बोलने की समतुल्यता अद्‌भुत है। इसमें एक ध्वनि के लिए एक ही चिह्न है परन्तु रोमन

> *आज देवनागरी की कम्प्यूटर के लिए उपयुक्तता साबित हो रही है। इंटरनेट, लैपटाप, टेबलेट तथा मोबाइल में इसका उपयोग बढ़ रहा है। याहू, गूगल और एमएसएन सब हिन्दी में हैं। सूचना, व्यापार और मनोरंजन की दुनिया में इसका प्रवेश हो रहा है।*

लिपि में यह सुविधा नहीं है। वहां ड़ का उच्चारण 'क' की ध्वनि के लिए (जैसे- कैटड़ at काईट kite) और 'स' की ध्वनि (जैसे- ceremony सेरेमोंनी, सिनेमा cinema) दोनों के लिए किया जाता है। रोमन में द और ड दोनों के लेखन में 'डी' अक्षर ही प्रयुक्त होता है। एक ड़ से अनेक ध्वनियाँ बनाती हैं जैसे ball, many, mat, made आदि। रोमन में एक वर्ण एक स्वनिक का नियम लागू नहीं लगता। अतः लिखे शब्द को जाने बिना शुद्ध उच्चारण असंभव हो जाता है। कट और पुट में यू की ध्वनि अलग है। कुछ ध्वनियां उच्चारित ही नहीं होतीं (जैसे- catch कैच, half हाफ, budget बजट)।

तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो रोमन और देवनागरी की भी भिन्नता उल्लेखनीय है। यह भी स्मरणीय है कि रोमन में मात्र २६ वर्ण हैं जबकि देवनागरी में इसके दुगुने। मात्रा भी बड़े स्पष्ट ढंग से लगती है। स्वर और व्यंजन वैज्ञानिक क्रम में रखे गए हैं। ह्रस्व और दीर्घ स्वरों के बीच भेद बड़े सुस्पष्ट ढंग से प्रस्तुत किया गया है। स्वरों में ऐसी व्यवस्था रखी गई है जिसे 'मूल' और 'संयुक्त' की दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। उच्चारण स्थान के आधार पर वर्णों का वर्गीकरण इसकी अपनी विशेषता है। कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ से निकालने वाली ध्वनियां वर्गीकृत हैं। विनोबा ने इसे 'विश्वनागरी' कहा था। लिप्यान्तरण और प्रतिलेखन के लिए उचित है। गुणवता की दृष्टि से नागरी अधिक समृद्ध है। इसे देश-विदेश के अनेक विद्वानों ने माना है। मात्राओं, अनुस्वार, विसर्ग, हल, अनुनासिकता के चिह्न दिए गए हैं। यह भी उल्लेख्य है कि संस्कृत, मराठी, डोगरी, मैथिली, बोडो और नेपाली की भी यही लिपि है। प्रामाणिकता, स्पष्टता और निर्भ्रान्तता। देवनागरी किसी भी भाषा की ध्वनियों को व्यक्त करने में समर्थ है। लार्ड कर्जन ने १९०० में प्रशासन में हिन्दी देवनागरी के प्रयोग की सुविधा मिली।

आज देवनागरी की कम्प्यूटर के लिए उपयुक्तता साबित हो रही है। इंटरनेट, लैपटाप, टेबलेट तथा मोबाइल में इसका उपयोग बढ़ रहा है। याहू, गूगल और एमएसएन सब हिन्दी में हैं। सूचना, व्यापार और मनोरंजन की दुनिया में इसका प्रवेश हो रहा है। भाषा का लिखित रूप हमारे लिए एक नई सृजनात्मक दुनिया का मार्ग खोलती है। आक्षरिकता के कारण कम समय और स्थान में लिख लेते हैं। इसकी शिरोरेखा व्यवस्था और सौन्दर्य का आधार है। इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों के विकास के साथ हिन्दी अनेक दृष्टियों से प्रभावी हो रही है। हिन्दी का होना नागरी के साथ अभिन्न रूप से जुटा है। आज आवश्यकता है कि देवनागरी के उपयोग को प्रभावी बनाना चाहिए और इसकी तकनीकी उपयुक्तता का मार्ग सरल बनाना चाहिए।■